

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन

सितम्बर 1931—दिसम्बर 1931 तक लार्ड विलिंगटन उस समय भारत का वायसराय था। गांधीजी ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया तथा कांग्रेस का एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में प्रतिनिधित्व किया। रैम्जे मेकडोनाल्ड उस समय ब्रिटेन का प्रधानमंत्री था। उसने दलितों के लिए पृथक् निर्वाचक मंडल का प्रस्ताव रखा परंतु गांधी जी उससे सहमत नहीं थे। इसलिए बिना किसी परिणाम के द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 1 दिसम्बर 1931 को समाप्त कर दिया।

रैम्जे मेकडोनाल्ड पुरस्कार — दलितों के लिए अवार्ड या सांप्रदायिक पंचाट

16 अगस्त 1932 ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मेकडोनाल्ड ने दलितों के लिए पृथक् निर्वाचक मंडल की घोषणा की इसे ही साम्प्रदायिक पंचाट कहते हैं। बी. आर. अम्बेडकर ने इसमें केन्द्रीय भूमिका निभाई परंतु महात्मा गांधी इस घोषणा के विरुद्ध थे।

पूना पैक्ट

जब गांधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से वापिस मुम्बई आते ही ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया तथा पूना के यरवदा जेल में बंदी बनाया गया। पूना समझौता 24 सितम्बर, 1932 ई. को हुआ। ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मेकडोनाल्ड के साम्प्रदायिक निर्णय के द्वारा न केवल मुसलमानों को, बल्कि दलित जाति के हिन्दुओं को सवर्ण हिन्दुओं से अलग करने के लिए भी पृथक् प्रतिनिधित्व प्रदान कर दिया गया था। इस निर्णय के खिलाफ 20 सितम्बर, 1932 को उन्होंने जेल में ही आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से पूना में गाँधी जी और बी.आर. अम्बेडकर के मध्य एक समझौता हुआ। अम्बेडकर ने समझौते के अन्तर्गत हरिजनों के लिए पृथक् प्रतिनिधित्व की मांग को वापस ले लिया तथा संयुक्त निर्वाचन के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया। इस समझौते के अन्तर्गत हरिजनों के लिए विधानमण्डलों में सुरक्षित स्थान को 71 से बढ़ाकर 148 कर दिया गया। इसी समय रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गाँधी जी के बारे में कहा था— “भारत की एकता और उसकी सामाजिक अखण्डता के लिए यह एक उत्कृष्ट बलिदान है। हमारे व्यथित हृदय आपकी महान् तपस्या का आदर और प्रेम के साथ अनुसरण करेंगे।”

तृतीय गोलमेज सम्मेलन

17 नवम्बर 1932 कांग्रेस ने इसमें भी भाग नहीं लिया परंतु कांग्रेस की अनुपस्थिति में भी ब्रिटिश सरकार ने साइमन कमीशन के रिपोर्ट को 1935 के भारत शासन अधिनियम का प्रारूप बना दिया।

1935 का भारत शासन अधिनियम

(1) भारतीय संघ का गठन — योजनानुसार भारत देशी रियासतों और ब्रिटिश शासित प्रांतों का संघ होगा। परंतु वास्तव में देशी रियासतों ने इस प्रकार के संघ के गठन में कोई रुचि नहीं दिखाई।

(2) संघ और राज्यों के मध्य विषयों का बंटबारा जिससे तीन सूचियां अस्तित्व में आईं। संघ, राज्य, समवर्ती सूची

(3) राज्यों से द्वैध शासन की समाप्ति

(4) केन्द्र में द्वैध शासन का श्रीगणेश

(5) भारत परिषद् का उन्मूलन तथा गवर्नर जनरल सीधे क्राउन के प्रति उत्तरदायी बनाया गया।

(6) वर्मा को भारतीय प्रशासन से पृथक्करण

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

को गिरफ्तार किया और बिना कोई मुकदमा चलाये उन्हें अनिश्चित काल के लिये म्याँमार के माण्डले कारागृह में बन्दी बनाकर भेज दिया।

5 नवम्बर 1925 को देशबंधु चित्तरंजन दास कोलकाता में चल बसे। सुभाष ने उनकी मृत्यु की खबर माण्डले कारागृह में रेडियो पर सुनी। माण्डले कारागृह में रहते समय सुभाष की तबियत बहुत खराब हो गयी। उन्हें तपेदिक हो गया। परन्तु अंग्रेज सरकार ने फिर भी उन्हें रिहा करने से इन्कार कर दिया। सरकार ने उन्हें रिहा करने के लिए यह शर्त रखी कि वे इलाज के लिये यूरोप चले जायें। लेकिन सरकार ने यह स्पष्ट नहीं किया कि इलाज के बाद वे भारत कब लौट सकते हैं। इसलिए सुभाष ने यह शर्त स्वीकार नहीं की। आखिर में परिस्थिति इतनी कठिन हो गयी कि जेल अधिकारियों को यह लगने लगा कि शायद वे कारावास में ही न मर जायें। अंग्रेज सरकार यह खतरा भी नहीं उठाना चाहती थी कि सुभाष की कारागृह में मृत्यु हो जाये। इसलिये सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया। उसके बाद सुभाष इलाज के लिये डलहौजी चले गये।

1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकाता का महापौर चुना गया। इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गयी। 1932 में सुभाष को फिर से कारावास हुआ। इस बार उन्हें अल्मोड़ा जेल में रखा गया। अल्मोड़ा जेल में उनकी तबियत फिर से खराब हो गयी। चिकित्सकों की सलाह पर सुभाष इस बार इलाज के लिये यूरोप जाने को राजी हो गये।

सन् 1933 से लेकर 1936 तक सुभाष यूरोप में रहे। यूरोप में सुभाष ने अपनी सेहत का ख्याल रखते हुए अपना कार्य बदस्तूर जारी रखा। वहाँ वे इटली के नेता मुसोलिनी से मिले, जिन्होंने उन्हें भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में सहायता करने का वचन दिया। आयरलैंड के नेता डी वलेरा सुभाष के अच्छे दोस्त बन गये। जिन दिनों सुभाष यूरोप में थे उन्हीं दिनों जवाहरलाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू का ऑस्ट्रिया में निधन हो गया। सुभाष ने वहाँ जाकर जवाहरलाल नेहरू को सान्त्वना दी।

बाद में सुभाष यूरोप में विठ्ठल भाई पटेल से मिले। विठ्ठल भाई पटेल के साथ सुभाष ने मन्त्रणा की जिसे पटेल-बोस विश्लेषण के नाम से प्रसिद्धि मिली। इस विश्लेषण में उन दोनों ने गान्धी के नेतृत्व की जमकर निन्दा की। उसके बाद विठ्ठल भाई पटेल जब बीमार हो गये तो सुभाष ने उनकी बहुत सेवा की। मगर विठ्ठल भाई पटेल नहीं बचे, उनका निधन हो गया। विठ्ठल भाई पटेल ने अपनी वसीयत में अपनी सारी सम्पत्ति सुभाष के नाम कर दी। मगर उनके निधन के पश्चात् उनके भाई सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इस वसीयत को स्वीकार नहीं किया। सरदार पटेल ने इस वसीयत को लेकर अदालत में मुकदमा चलाया। यह मुकदमा जीतने पर सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने भाई की सारी सम्पत्ति गान्धी के हरिजन सेवा कार्य को भेंट कर दी।

1934 में सुभाष को उनके पिता के मृत्युशय्या पर होने की खबर मिली। खबर सुनते ही वे हवाई जहाज से कराची होते हुए कोलकाता लौटे। यद्यपि कराची में ही उन्हें पता चल गया था कि उनके पिता की मृत्यु हो चुकी है फिर भी वे कोलकाता गये। कोलकाता पहुँचते ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और कई दिन जेल में रखकर वापस यूरोप भेज दिया।

सन् 1934 में जब सुभाष ऑस्ट्रिया में अपना इलाज कराने हेतु ठहरे हुए थे उस समय उन्हें अपनी पुस्तक लिखने हेतु एक अंग्रेजी जानने वाले टाइपिस्ट की आवश्यकता हुई। उनके एक मित्र ने एमिली शेंकल नाम की एक ऑस्ट्रियन महिला से उनकी मुलाकात करा दी। एमिली के पिता एक प्रसिद्ध पशु चिकित्सक थे। सुभाष एमिली की ओर आकर्षित हुए और उन दोनों में स्वाभाविक प्रेम हो गया। नाजी जर्मनी के सख्त कानूनों को देखते हुए उन दोनों ने सन् 1942 में बाड गास्टिन नामक स्थान पर हिन्दू पद्धति से विवाह रचा लिया। वियेना में एमिली ने एक पुत्री को जन्म दिया। सुभाष ने उसे पहली बार तब देखा जब वह मुश्किल से चार सप्ताह की थी। उन्होंने उसका नाम अनिता बोस रखा था। अगस्त 1945 में ताइवान में हुई तथाकथित विमान दुर्घटना में जब सुभाष की मौत हुई, अनिता पौने तीन साल की थी। अनिता अभी जीवित है। उसका नाम अनिता बोस फाफ है। अपने पिता के परिवार जनों से मिलने अनिता फाफ कभी-कभी भारत भी आती है।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

3 सितम्बर 1939 को मद्रास में सुभाष को ब्रिटेन और जर्मनी में युद्ध छिड़ने की सूचना मिली। उन्होंने घोषणा की कि अब भारत के पास सुनहरा मौका है उसे अपनी मुक्ति के लिये अभियान तेज कर देना चाहिये। 8 सितम्बर 1939 को युद्ध के प्रति पार्टी का रुख तय करने के लिये सुभाष को विशेष आमन्त्रित के रूप में काँग्रेस कार्य समिति में बुलाया गया। उन्होंने अपनी राय के साथ यह संकल्प भी दोहराया कि अगर काँग्रेस यह काम नहीं कर सकती है तो फॉरवर्ड ब्लॉक अपने दम पर ब्रिटिश राज के खिलाफ युद्ध शुरू कर देगा। अगले ही वर्ष जुलाई में कलकत्ता स्थित हालवेट स्तम्भ जो भारत की गुलामी का प्रतीक था सुभाष की यूथ ब्रिगेड ने रातोंरात वह स्तम्भ मिट्टी में मिला दिया। सुभाष के स्वयंसेवक उसकी नींव की एक-एक ईंट उखाड़ ले गये। यह एक प्रतीकात्मक शुरुआत थी। इसके माध्यम से सुभाष ने यह सन्देश दिया था कि जैसे उन्होंने यह स्तम्भ धूल में मिला दिया है उसी तरह वे ब्रिटिश साम्राज्य की भी ईंट से ईंट बजा देंगे।

इसके परिणामस्वरूप अंग्रेज सरकार ने सुभाष सहित फॉरवर्ड ब्लॉक के सभी मुख्य नेताओं को कैद कर लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सुभाष जेल में निष्क्रिय रहना नहीं चाहते थे। सरकार को उन्हें रिहा करने पर मजबूर करने के लिये सुभाष ने जेल में आमरण अनशन शुरू कर दिया। हालत खराब होते ही सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया। मगर अंग्रेज सरकार यह भी नहीं चाहती थी कि सुभाष युद्ध के दौरान मुक्त रहें। इसलिये सरकार ने उन्हें उनके ही घर पर नजरबन्द करके बाहर पुलिस का कड़ा पहरा बिठा दिया।

कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) स्थित नेताजी भवन जहाँ से सुभाष चन्द्र बोस वेश बदल कर फरार हुए थे। इस घर में अब नेताजी रिसर्च ब्यूरो स्थापित कर दिया गया है। भवन के बाहर लगे होर्डिंग पर सैनिक कमाण्डर वेष में नेताजी का चित्र साफ दिख रहा है। नजरबन्दी से निकलने के लिये सुभाष ने एक योजना बनायी। 16 जनवरी 1941 को वे पुलिस को चकमा देते हुए एक पठान मोहम्मद ज़ियाउद्दीन के वेश में अपने घर से निकले। शरदबाबू के बड़े बेटे शिशिर ने उन्हें अपनी गाड़ी से कोलकाता से दूर गोमोह तक पहुँचाया। गोमोह रेलवे स्टेशन से फ्रण्टियर मेल पकड़कर वे पेशावर पहुँचे। पेशावर में उन्हें फॉरवर्ड ब्लॉक के एक सहकारी, मियाँ अकबर शाह मिले। मियाँ अकबर शाह ने उनकी मुलाकात, किर्ती किसान पार्टी के भगतराम तलवार से करा दी। भगतराम तलवार के साथ सुभाष पेशावर से अफगानिस्तान की राजधानी काबुल की ओर निकल पड़े। इस सफर में भगतराम तलवार रहमत खान नाम के पठान और सुभाष उनके गूँगे-बहरे चाचा बने थे। पहाड़ियों में पैदल चलते हुए उन्होंने यह सफर पूरा किया।

काबुल में सुभाष दो महीनों तक उत्तमचन्द मल्होत्रा नामक एक भारतीय व्यापारी के घर में रहे। वहाँ उन्होंने पहले रूसी दूतावास में प्रवेश पाना चाहा। इसमें नाकामयाब रहने पर उन्होंने जर्मन और इटालियन दूतावासों में प्रवेश पाने की कोशिश की। इटालियन दूतावास में उनकी कोशिश सफल रही। जर्मन और इटालियन दूतावासों ने उनकी सहायता की। आखिर में आरलैण्डो मैजोन्टा नामक इटालियन व्यक्ति बनकर सुभाष काबुल से निकलकर रूस की राजधानी मास्को होते हुए जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुँचे।

बर्लिन में सुभाष सर्वप्रथम रिबेन ट्रूप जैसे जर्मनी के अन्य नेताओं से मिले। उन्होंने जर्मनी में भारतीय स्वतन्त्रता संगठन और आज़ाद हिन्द रेडियो की स्थापना की। इसी दौरान सुभाष नेताजी के नाम से जाने जाने लगे। जर्मन सरकार के एक मन्त्री एडम फॉन ट्रॉट सुभाष के अच्छे दोस्त बन गये। आखिर 29 मई 1942 के दिन, सुभाष जर्मनी के सर्वोच्च नेता एडॉल्फ हिटलर से मिले। लेकिन हिटलर को भारत के विषय में विशेष रुचि नहीं थी। उन्होंने सुभाष को सहायता का कोई स्पष्ट वचन नहीं दिया। कई साल पहले हिटलर ने माईन काम्फ नामक आत्मचरित्र लिखा था। इस किताब में उन्होंने भारत और भारतीय लोगों की बुराई की थी। इस विषय पर सुभाषने हिटलर से अपनी नाराजगी व्यक्त की। हिटलर ने अपने किये पर माफी माँगी और माईन काम्फ के अगले संस्करण में वह परिच्छेद निकालने का वचन दिया।

अन्त में सुभाष को पता लगा कि हिटलर और जर्मनी से उन्हें कुछ और नहीं मिलने वाला है। इसलिये 8 मार्च 1943 को जर्मनी के कील बन्दरगाह में वे अपने साथी आबिद हसन सफरानी के साथ एक जर्मन पनडुब्बी में बैठकर पूर्वी एशिया की ओर निकल गये। वह जर्मन पनडुब्बी उन्हें हिन्द महासागर में मैडागास्कर के किनारे तक लेकर गयी। वहाँ वे दोनों समुद्र में तैरकर जापानी पनडुब्बी तक

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

कांग्रेस मंत्रिमंडलों का त्यागपत्र

3 सितम्बर 1939 को यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया। भारतीय नेताओं से बिना किसी सलाह मशविरे के ब्रिटिश वायसराय ने यह घोषणा कर दी कि भारत बिट्रेन की ओर युद्ध लड़ेगा। इस घोषणा से भारतीय नेता स्तब्ध रह गये। भारतीय नेताओं के अनुसार भारत खुद को किसी भी ऐसे युद्ध से नहीं जोड़ सकता जो तथा कथित लोकतंत्र की रक्षा के लिए लड़ा जा रहा है जबकि इसके स्वतंत्रता के अधिकार को अनदेखी की जा रही है। 22 दिसम्बर 1939 को कांग्रेस सरकारों ने सामूहिक रूप से इस्तीफा दे दिया। जिन्ना को इससे बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसने इस दिन को 'मुक्ति दिवस' के रूप में मनाने का भारतीय मुस्लिमों से आग्रह किया।

द्विराष्ट्र सिद्धांत

चौधरी रहमत अली जी को कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक थे, ने 1930 में यह सलाह दी थी कि सीमांत प्रांत, बलुचिस्तान, सिंध, कश्मीर को मिलाकर एक पृथक राष्ट्र का निर्माण किया जाना चाहिए, इस राष्ट्र का नाम पाकिस्तान रखा जाना चाहिए इसे ही द्विराष्ट्र सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। प्रसिद्ध शायर तथा सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा नामक गीत के रचयिता इकबाल ने पाकिस्तान के निर्माण का समर्थन किया। 1940 में लाहौर में मुस्लिम लीग के वार्षिक अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान के निर्माण का संकल्प पारित किया तथा भारत शासन अधिनियम 1935 के संघीय स्वरूप को नकार दिया।

अगस्त प्रस्ताव

1940 लार्ड लिनलिथगो भारत को वायसराय ने 8 अगस्त 1940 को एक प्रस्ताव रखा (1) इस प्रस्ताव के अनुसार युद्ध समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार भारत में डोमेनियन स्टेट स्थापित करने में सहमत हो गई। (2) इस प्रस्ताव के द्वारा भारतीयों को अपना संविधान निर्मित करने का अधिकार दिया जाना था। (3) भारत का कोई भी समुदाय अपना संविधान निर्मित करने का अधिकार रखता है। कांग्रेस ने इन प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया क्योंकि कांग्रेस को ब्रिटिश सरकार द्वारा उस समय उपेक्षित किया गया था जब कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दिया था। दूसरी ओर मुस्लिम लीग ने इसका समर्थन किया। इन प्रस्तावों को अगस्त प्रस्ताव भी कहा जाता है।

व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन

अगस्त प्रस्तावों को अस्वीकार करने के पश्चात् कांग्रेस ने एक व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ करने का निर्णय लिया। कांग्रेसी कार्यकर्ता नेतृत्व के लिए गांधीजी की ओर देख रहे थे लेकिन गांधीजी कुछ भी ऐसा नहीं करना चाहते थे जिससे राजनीतिक इसलिए कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह करने का निर्णय लिया। 17 अक्टूबर 1940 को विनोबा भावे पहले सत्याग्रही पं. नेहरू द्वितीय सत्याग्रही बनें।

क्रिप्स मिशन 1942

ब्रिटिश सरकार ने यह अनुभव किया कि भारत की समस्याओं और अधिक दिनों तक उपेक्षित नहीं किया जा सकता। 1942 में ही जापान भी द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल हो गया। इससे अंग्रेजों की स्थिति और खराब हो गयी। 7 मार्च 1942 तक जापानी सेनाओं ने रंगून सहित दक्षिण पूर्वी एशिया पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश सरकार भारतीयों से सहयोग चाहती थी। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने स्टेफोर्ड क्रिप्स को कुछ प्रस्तावों के साथ भारत भेजा। सर स्टेफोर्ड क्रिप्स ब्रिटिश मंत्रीमंडल के सदस्य थे। उन्होंने अगस्त प्रस्ताव को ही दोहराया। इन प्रस्तावों के अनुसार —

- (1) भारतीयों को संविधान निर्मित करने का अधिकार दिया जायेगा।
- (2) भारत को डोमेनियन राज्य का दर्जा दिया जायेगा।
- (3) वे राज्य जो भारतीय संघ में शामिल नहीं होना चाहते हैं अपना अलग संविधान निर्मित कर सकते हैं।
- (4) अल्प संख्यकों के हितों की रक्षा की जायेगी।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

जनता ने स्वयं अपना नेतृत्व संभाल कर जुलूस निकाला और सभाएँ कीं। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान यह पहला आन्दोलन था, जो नेतृत्व विहीनता के बाद भी उत्कर्ष पर पहुँचा। सरकार ने जब आन्दोलन को दबाने के लिए लाठी और बन्दूक का सहारा लिया तो आन्दोलन का रुख बदलकर हिंसात्मक हो गया। अनेक स्थानों पर रेल की पटरियाँ उखाड़ी गईं और स्टेशनों में आग लगा दी गई। बम्बई, अहमदाबाद एवं जमशेदपुर में मजदूरों ने संयुक्त रूप से विशाल हड़ताल कीं। संयुक्त प्रांत में बलिया एवं बस्ती, बम्बई में सतारा, बंगाल में मिदनापुर एवं बिहार के कुछ भागों में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के समय अस्थायी सरकारों की स्थापना की गयी। इन स्वाशासित समानान्तर सरकारों में सर्वाधिक लम्बे समय तक सरकार सतारा तक थी। यहाँ पर विद्रोह का नेतृत्व नाना पाटिल ने किया था। सतारा के सबसे महत्वपूर्ण नेता वाई.बी. चाह्माण थे। पहली समान्तर सरकार बलिया में चितू पाण्डेय के नेतृत्व में बनी।

बंगाल के मिदनापुर ज़िले में तामलुक अथवा ताम्रलिप्ति में गठित राष्ट्रीय सरकार 1944 ई. तक चलती रही। यहाँ की सरकार को जातीय सरकार के नाम से जाना जाता है। सतीश सावंत के नेतृत्व में गठित इस जातीय सरकार ने स्कूलों को अनुदान दिये और 'सशस्त्र विद्युत वाहिनी सैन्य संगठन' बनाया। इस आन्दोलन से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र थे— बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, मद्रास एवं बम्बई। जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया एवं अरुणा असिफ़ अली जैसे नेताओं ने भूमिगत रहकर इस आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। बम्बई में उषा मेहता एवं उनके कुछ साथियों ने कई महीने तक कांग्रेस रेडियो का प्रसारण किया। राममनोहर लोहिया नियमित रूप से रेडियो पर बोलते थे। नवम्बर 1942 ई. में पुलिस ने इसे खोज निकाला और जब्त कर लिया।

जिस दौरान कांग्रेस के नेता जेल में थे, ठीक इसी समय मोहम्मद अली जिन्ना तथा मुस्लिम लीग के उनके साथी अपना प्रभाव क्षेत्र फैलाने में लग गये। इसी वर्ष में मुस्लिम लीग को पंजाब और सिंध में अपनी पहचान बनाने का मौका मिला, जहाँ पर उसकी अभी तक कोई खास पहचान नहीं थी। जून 1944 ई. में जब विश्वयुद्ध समाप्ति की ओर था, गाँधी जी को जेल से रिहा कर दिया गया। जेल से निकलने के बाद उन्होंने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच फासले को पाटने के लिए जिन्ना के साथ कई बार मुलाकात की और उन्हें समझाने का प्रयत्न किया। इसी समय 1945 ई. में ब्रिटेन में 'लेबर पार्टी' की सरकार बन गई। यह सरकार पूरी तरह से भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी। उसी समय वायसराय लॉर्ड वेवेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के बीच कई बैठकों का आयोजन किया।

तत्कालीन भारतीय राजनीतिक दलों में 'साम्यवादी दल' ने इस आन्दोलन की आलोचना की। मुस्लिम लीग ने भी 'भारत में छोड़ो आन्दोलन' की आलोचना करते हुए कहा कि "आन्दोलन का लक्ष्य भारतीय स्वतन्त्रता नहीं, वरन् भारत में हिन्दू साम्राज्य की स्थापना करना है, इस कारण यह आन्दोलन मुसलमानों के लिए घातक है।" मुस्लिम लीग तथा उदारवादियों को भी यह आन्दोलन नहीं भाया। सर तेजबहादुर सप्रू ने इस प्रस्ताव को 'अविचारित तथा असामयिक' बताया। भीमराव अम्बेडकर ने इसे 'अनुत्तरदायित्व पूर्ण और पागलपन भरा कार्य' बताया। 'हिन्दू महासभा' एवं 'अकाली आन्दोलन' ने भी इसकी आलोचना की। यह आन्दोलन संगठन एवं आयोजन में कमी, सरकारी सेवा में कार्यरत उच्चाधिकारियों की वफादारी व आन्दोलनकारियों के पास साधन एवं शक्ति के अभाव के कारण पूर्ण रूप में सफल नहीं हो सका।

सी. आर. फार्मूला

इस बीच कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के मध्यगतिरोध को हल करने के प्रयास तेज कर दिये गये। परिप्रेक्ष्य में कुछ व्यक्तिगत प्रयास भी समस्या के समाधान हेतु किये गये। व्यक्तिगत स्तर पर गतिरोध को हल करने हेतु कुछ सुझाव दिये गये तथा प्रस्ताव पेश किए गये। इसी तरह का व्यक्तिगत स्तर पर एक प्रयास कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राजगोपालाचारी ने किया। राजगोपालाचारी ने कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के मध्य सहयोग बढ़ाने हेतु 10 जुलाई 1944 को एक फार्मूला प्रस्तुत किया, जिसे उन्हीं के नाम पर राजगोपालाचारी फार्मूले के नाम से जाना है। यह फार्मूला अप्रत्यक्ष रूप से पृथक पाकिस्तान की अवधारणा का ही प्रस्ताव था। गांधीजी ने इस फार्मूले का समर्थन किया। इस फार्मूले की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार थीं—

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

है तथा वही गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद् में मुस्लिम प्रतिनिधि भेजेगी। जबकि दूसरी ओर कांग्रेस जिसने शिमला सम्मेलन में मौलाना अब्दुल कलाम आजाद को अपना प्रतिनिधि बनाया था ने कहा कि वह भारत में सभी समुदायों का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए कांग्रेस को कार्यकारी परिषद् में मुस्लिम प्रतिनिधियों को भेजने का अधिकार होना चाहिए। मुस्लिम लीग ने कांग्रेस के इस दावे को सिरे से नकार दिया तथा 14 जुलाई को लार्ड बेबेल में यह घोषणा कर दी कि वे अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुये।

कैबिनेट मिशन योजना

1945-46 तक स्वतंत्रता संघर्ष एक निर्णायक दौर में प्रवेश कर चुका था। कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के मध्य सद्भावपूर्ण संबंध स्थापित करने के ब्रिटिश सरकार के सभी प्रयत्न असफल हो चुके थे। ब्रिटिश सरकार इस राजनीतिक गतिरोध का कोई समाधान ढूँढ़ रही थी लेकिन दोनों बड़ी पार्टियाँ उसे कोई सहयोग नहीं कर रही थी। ऐसी स्थिति में ब्रिटिश सरकार ने एक विशेष मिशन कैबिनेट अर्थात् ब्रिटिश मंत्रिमंडल का दल भारत भेजा।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री लार्ड ऐटली ने 15 मार्च 1946 को इस विशेष दल के भारत दौरे की घोषणा की। यह त्रि-सदस्यीय दल था। सभी तीनों सदस्य कैबिनेट मंत्री थे (ब्रिटिश पार्लियामेंट में)। इसलिये इसे कैबिनेट मिशन के नाम से जाना जाता है। लार्ड पैथिक इसके अध्यक्ष थे। सर स्टेफोर्ड क्रिप्स तथा ए.वी. अलेक्जेंडर इसके दो सदस्य हैं। यह मिशन भारत में 24 मार्च 1946 को पहुंचा। मिशन का मुख्य उद्देश्य भारत की संविधान सभा का प्रारूप तैयार करना था तथा भारत के बड़े राजनैतिक दलों के साथ मिलकर गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद् को स्थापित करना था।

कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के नेताओं से गहन विचार विमर्श के बाद 16 मार्च 1946 को कैबिनेट मिशन ने निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किये—

- (1) भारत एक संघ होगा जिसका निर्माण ब्रिटिश भारत व देशी रियासतों दोनों को मिलाकर किया जायेगा।
- (2) एक संघीय विधायिका होगी — जिसका गठन दो सदनों से मिलकर किया जायेगा।
- (3) भारत की संघीय सरकार होगी जो केवल विदेशी सुरक्षा तथा संचार मामलों का ही प्रबंधन करेगी
- (4) सभी अवशिष्ट शक्तियां प्रांतों के पास होगी।
- (5) सभी प्रांतों को तीन भागों में बांटा जायेगा — (i) पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत के राज्य जिसमें बलूचिस्तान तथा पंजाब भी होंगे (ii) बंगाल व असम (iii) अन्य राज्य
- (6) इन तीनों समूहों के पास वीटो शक्तियां होगी।
- (7) पाकिस्तान की मांग पर विचार नहीं किया जायेगा।
- (8) एक संविधान सभी द्वारा देश के संघीय संविधान का निर्माण किया जायेगा।
- (9) जब तक भारत का संविधान गठित नहीं कर लिया जाता तब तक के लिए एक अंतरिम सरकार बनायी जायेगी। जिसमें भारत के सभी बड़े राजनीतिक दल भागीदारी करेंगे।

24 मई 1946 को कांग्रेस ने इस योजना को स्वीकार कर लिया हालांकि उसे अंतरिम सरकार की बात मंजूर नहीं थी। 6 जून 1946 को मुस्लिम लीग ने भी इसे स्वीकार कर लिया। अब वायसराय को चाहिए था कि यह मुस्लिम लीग तथा कांग्रेस नेताओं को अंतरिम सरकार के लिए बुलाये पर उसने ऐसा नहीं किया।

अंतरिम सरकार

एक लम्बे इंतजार के बाद 2 सितम्बर 1946 भारत के गणतंत्र जनतंत्र ने दोनों पार्टियों को आमंत्रित किया।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महत्वपूर्ण अधिवेशन

प्रथम अधिवेशन ,72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, कांग्रेस के उद्देश्य तय किए गए

2	1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	436 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, राष्ट्रीय कांग्रेस और राष्ट्रीय कांग्रेस का विलय
3	1887	मद्रास	सैयद बदरुद्दीन तैयबजी	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष
4	1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूल	प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष
5	1889	बम्बई	सर विलियम वेडरबर्न	
6	1890	कलकत्ता	फिरोजशाह मेहता	
7	1891	नागपुर	आनन्द चार्लू	
8	1892	इलाहाबाद	व्योमेश चन्द्र बनजम	
9	1893	लाहौर	दादाभाई नौरोजी	
10	1894	मद्रास	अल्फ्रेड वेब	
11	1895	पूना	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	
12	1896	कलकत्ता	एम.ए.सयानी	
13	1897	अमरावती	एम.सी.शंकरन	
14	1898	मद्रास	आन्नद मोहन बोस	
15	1899	लखनऊ	रमेशचन्द्र दत्त	भूराजस्व को स्थायी करने की मांग
16	1900	लाहौर	एन.जी.चन्द्रावरकर	
17	1901	कलकत्ता	दिनशा ई.वाचा	
18	1902	अहमदाबाद	सुरेन्द्रनाथ बनजम	
19	1903	मद्रास	लाल मोहन घोष	
20	1904	बम्बई	सर हेनरी कॉटन	
21	1905	बनारस	गोपाल कृष्ण गोखले	बंगभंग और कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियों की आलोचना
22	1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	स्वराज शब्द का प्रथम बार प्रयोग
23	1907	सूरत	रासबिहारी घोष	कांग्रेस का नरमदल एवं गरमदल में विभाजन
24	1908	मद्रास	रासबिहारी घोष	कांग्रेस के संविधान का निर्माण
25	1909	लाहौर	मदनमोहन मालवीय	पृथक निर्वाचन पद्धति व्यवस्था को अस्वीकृत कर दिया गया
26	1910	इलाहाबाद	विलियम वेडरबर्न	
27	1911	कलकत्ता	बिशन नारायण धर	
28	1912	बांकीपुर	आर.एन.मधुकर	
29	1913	करांची	नबाब सैयद मुहम्मद	

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

55	1946	मेरठ	आचार्य जे.बी. कृपलानी	
57	1947	दिल्ली	राजेन्द्र प्रसाद	
58	1948	जयपुर	पट्टाभि सीतारामैया	स्वाधीनता पाने के बाद

